प्रातः क्लास 19/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ पूछते हैं–यहाँ जो तुम बैठे हो किसकी याद में बैठे हो? (बाप, शिक्षक, सद्गुरु की) सभी इन तीनों की याद में बैठे हो। हरेक अपने से पूछे। यह सिर्फ अभी यहाँ बैठे याद है या चलते-फिरते याद रहती है? क्योंकि यह है वण्डरफुल बात। और कोई आत्मा को कब ऐसे नहीं कहा जाता। भल यह ल०ना० विश्व के मालिक हैं; परन्तु उनकी आत्मा को कब ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। बल्कि जो भी सारी दुनिया में जीवात्माएँ हैं, कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कहेंगे। तुम बच्चे ही ऐसे याद करते हो। अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। सो भी सुप्रीम। तीनों को याद करते हो या एक को? भल वह है एक ही; परन्तु तीनों गुणों से याद करते हो? शिवबाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह एक्स्ट्रा ऑर्डीनरी कहा जाता है। जब बैठते हो, चलते-फिरते हो तो यह याद रहना चाहिए। बाप पूछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है? ऐसा दूसरा कोई भी देहधारी हो नहीं सकता। देहधारी नम्बरवन है। कृष्ण, उनको भी बाप, टीचर, गुरु कह नहीं सकते। यह बिल्कुल वण्डरफुल बात है। तो सच-2 बताना चाहिए। तीनों रूप में याद करते हो। भोजन पर बैठते हो सिर्फ शिवबाबा को याद करते हो या तीनों रूपों में याद आते हैं? और तो कोई भी आत्मा को ऐसे कह नहीं सकते। यह है वण्डरफुल बात। अजीब महिमा है बाप की। तो बाप को याद भी ऐसे करना है तो बुद्धि एकदम उस तरफ चली जावेगी जो जैसा वण्डरफुल है। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं फिर सारे चक्र का भी नॉलेज देते हैं। ऐसा यह युग है। इतने-2 वर्ष की है। जो फिरते रहते हैं। यह पढ़ाई भी वह रचयिता बाप ही कराते हैं। तो उनको याद करने में(से) मदद बहुत होगी। बाप, टीचर, गुरु वह एक ही है, इतनी ऊँच आत्मा और कोई हो नहीं सकती; परन्तु माया ऐसी है जो बाप की याद भी भुला देती है। तो टीचर, गुरु को भी भूल जाते हैं। यह हरेक को अपने दिल से पूछना है। बाबा हमको ऐसा विश्व का मालिक बनाते हैं। बेहद के बाप का वर्सा ज़रूर बेहद का ही होगा। साथ-2 यह महिमा भी बुद्धि में आनी चाहिए। चलते-फिरते तीनों ही याद आनी चाहिए। यह एक ऐसी आत्मा की तीनों सर्विस इकट्ठी है; इसलिए उनको सुप्रीम कहा जाता है।

अभी कॉनफ्रेन्स आदि बुलाते हैं, कहते हैं विश्व में शांति कैसे हो? वह तो हो रही है। आकर स(मझो), (कौ)न कर रहे हैं। तुमको बाप का ऑक्युपेशन तो सिद्ध कर बताना है। बाप की ऑक्युपेशन और कृष्ण की ऑक्युपेशन में बहुत फर्क है। और तो सभी का नाम शरीर का ही लिया जाता है। उनकी आत्मा का नाम गाया जाता है। वह आत्मा बाप भी है, टीचर भी है; क्योंकि उन(की) आत्मा में फुल नॉलेज है; परन्तु वह दे कैसे? शरीर द्वारा ही देंगे ना। जब देते हैं तब तो महिमा गाई जाती है। अभी शिवजयन्ती पर बच्चे कॉनफ्रेन्स करते हैं, सभी धर्म के नेताओं को मँगाते हैं। तुमको समझाना है ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। अगर सभी में ईश्वर है तो क्या हरेक आत्मा भगवान, बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है? बताओ सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का नॉलेज है? यह तो कोई भी सुना न सके। तुम बच्चों के अन्दर में आना चाहिए ऊँच ते ऊँच बाप की कितनी महिमा है। सारे विश्व को पावन बनाने वाला है। प्रकृति भी पावन बन जाती है। कॉनफ्रेन्स में पहले-2 तो तुम यह पूछेंगे गीता का भगवान कौन? सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला कौन? अगर कृष्ण के लिए कहेंगे तो बाप को गुम कर देंगे या तो फिर कह देते हैं वह नाम-रूप से न्यारा है। जैसे कि है ही नहीं। तो बाप बिगर ऑरफन ठहरे ना। बेहद के बाप को ही नहीं जानते हैं। कितना तंग करते हैं, एक-दो पर काम-कटारी चलाकर कितना तंग करते हैं। एक-दो को काटते हैं। तक्षक सर्प भी सबसे बड़ा होता है। इस समय हरेक मनुष्य तक्षक सर्प है। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री सर्पनी है। तो ज़रूर खुद भी सर्प ठहरे ना। तो यह सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में चलनी चाहिए। कॉन्ट्रास्ट करना है। यह ल०ना० भगवती-भगवान थे। इन्हों की भी वंशाव(ली)

हुई है ना। तो ज़रूर सभी ऐसे गॉड-गॉडेस होनी चाहिए। तो तुम सभी धर्म वालों को मंगाते हो, जो अच्छी रीत पढ़े-लिखे हैं, बाप का परिचय दे सकें उनको ही बुलाना है। तुम लिख सकते हो जो आकर रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का परिचय देवे उनके लिए हम आने-जाने का सभी प्रबन्ध करेंगे। अगर रचयिता और रचना का परिचय दिया तो। यह तो जानते हो कोई भी ज्ञान दे नहीं सकते हैं। भल कोई विलायत से आवे, रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का परिचय दिया तो हम खर्चा देंगे। ऐसी एडवरटाइज़ और कोई तो कर न सके। तुम तो बहादुर हो ना। महावीर-महावीरनियाँ हो। तुम जानते हो इन्होंने विश्व की बादशाही कैसे ली। कौन सी बहादुरी की। बुद्धि में यह सभी बातें आनी चाहिए। कितना तुम ऊँच कार्य कर रहे हो। सारे विश्व को पावन बना रहे हो। तो बाप को याद करना है। सिर्फ यह नहीं कि शिवबाबा याद है; परन्तु उनकी महिमा भी बतानी है। यह है महिमा निराकार की; परन्तु निराकार अपना परिचय कैसे देंगे? ज़रूर रचना के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज देने लिए मुख चाहिए ना। मुख की कितनी महिमा है। मनुष्य गऊ मुख पर जाने कितना धक्का खाते हैं। क्या-2 बातें बना दी हैं। तीर मारा गंगा निकल गाई। गंगा को समझते हैं पतित-पावन। अभी पानी कैसे पतित-पावन हो सकता। पतित-पावन तो एक बाप ही है। तो बाप तुम बच्चों को कितना सिखलाते रहते हैं। इतना बुद्धि में आता नहीं है कि क्या-2 आर्टीकल देवें। बाबा तो कहते हैं यह करो। कौन आकर रचयिता और (र)चना के आदि-मध्य-अंत का परिचय देंगे। साधु-सन्यासी आदि भी यह नहीं जानते हैं। ऋषि-मुनि सभी कहते थे नेती-2 हम नहीं जानते हैं। गोया नास्तिक थे। अभी देखो कोई आस्तिक निकलता है। अभी तुम बच्चे नास्तिक से आस्तिक बन रहे हो। तुम बेहद के बाप को जानते हो जो तुमको इतना ऊँच बनाते हैं। पुकारते भी हैं ओ गॉड फादर! लिबरेट करो। बाप समझाते हैं इस समय रावण का सारे विश्व पर राज्य है। सभी भ्रष्टाचारी हैं। फिर श्रेष्ठाचारी भी होंगे ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है पहले-2 पवित्र दुनिया थी। बाप अपवित्र दुनिया वेश्यालय थोड़े ही रचेंगे। बाप तो आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको शिवालय कहा जाता है। शिवबाबा शिवालय बनावेंगे। वह कैसे बनाते हैं सो भी तुम जानते हो। महाप्रलय, जलमय आदि तो होती नहीं। शास्त्रों में तो क्या-2 बैठ लिखा है। बाकी पाँच पाण्डव बचे जो हिमालय में जाकर गल गए। फिर रिजल्ट क्या हुई? रिज़ल्ट का कोई को भी पता नहीं है। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो वह बाप बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। तुम्हारे बिगर कोई समझ न सके। बड़े-2 महात्मा लोग भी पुजारी हैं। वहाँ तो मंदिर आदि होते ही नहीं। यह देवताएँ होकर गए हैं जिनकी यादगार मंदिर यहाँ है। यह सभी ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड व सेकण्ड नई बात होती रहती है। चक्र फिरता रहता है। अभी बाप बच्चों को डायरैक्शन तो बहुत अच्छी देते हैं। बहुत देहअभिमानी महारथी हैं जो समझते हैं हम तो सभी कुछ जान गए हैं। मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। कदर ही नहीं है। बाबा ताकीद करते हैं कोई-कोई समय मुरली बहुत अच्छी चलती है। मिस न करनी चाहिए। 10/15 दिन मुरलियाँ जो मिस होती हैं वह बैठ पढ़नी चाहिए। यह भी बाप समझाते रहते हैं ऐसे-2 चैलेंज दो। यह रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का नॉलेज कोई आकर देवे तो हम उनको खर्चा आदि सभी देंगे। ऐसे चैलेंज तो जो जानते हैं वह देंगे ना। टीचर जो जानता है तब तो पूछते हैं ना। बिगर जानने से पूछेंगे कैसे। कोई-2 बच्चे मुरली की भी डोन्ट केयर करते हैं। बस, हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है; परन्तु शिवबाबा जो सुनाते हैं वह भी सुनना है ना, न कि सिर्फ उनको याद ही करना है। बाप कैसी अच्छी-2 बातें सुनाते हैं; परन्तु माया बिल्कुल ही मगरूर कर देती है। कहावत भी है ना कोई लधे हैड गिरे..... बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं, अपनी ही शास्त्रों की तिक-2 करते रहेंगे, मुरली पर ख्याल भी नहीं करते। मुरली में तो नई-2 बातें निकलती हैं ना। वह तो भल गीता आदि शास्त्रों से बातें निकालो। आटे में लून करके होगा। वह भी ज़रूर गीता में है। और शास्त्रों में तो कुछ भी नहीं है। तो यह सभी बातें समझने की हैं। जब बाप की याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप

टीचर भी है, सद्गुरु भी है, नहीं तो पढ़ेंगे कहाँ से। यह कॉनफ्रेन्स होगी बहुत अच्छी। फिर भी पत्थर बुद्धि तो है ना। बहुत थोड़े आवेंगे। बाबा के पास तो आ न सके। बाप ने तो बच्चों को सभी समझा दिया है। बच्चे ही बाबा का शो करेंगे। सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं ना। फिर बच्चों का काम है शो करना। फिर बाप थोड़े ही फिरेंगे। कहेंगे आज फलाने जगह जाओ, आज यहाँ जाओ। इनको थोड़े ही कोई ऑर्डर करने वाला होगा। तो यह निमंत्रण आदि अखबारों में भी पड़ेंगे। इस समय सारी दुनिया है नास्तिक। बाप ही आकर आस्तिक बनाते हैं। इस समय दुनिया है वर्थ नॉट ए पैनी। अमेरिका पास भल कितना भी धन-दौलत है; परन्तु वर्थ नॉट ए पैनी। यह तो सभी खत्म हो जाना है ना। सारी दुनिया में तुम वर्थ बन रहे हो। वहाँ कोई कंगाल होगा ही नहीं। तुम बच्चों को सदैव इस ज्ञान को सुमिरण कर हर्षित रहना चाहिए। इसके लिए ही गायन है अति इन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपियों से पूछो। संगमयुग की ही बात है। संगमयुग को कोई भी जानते नहीं। अभी देखने आते हैं वा नहीं। विहंगमार्ग की सर्विस करने से शायद महिमा निकले। बाप तो कहते हैं ऐसी हालत में महिमा मुश्किल निकलेगी। गायन है अहो प्रभु तेरी लीला..... यह कोई भी नहीं जानते थे कि बाप बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है। अभी फादर तो बच्चों को सिखलाते रहते हैं, बच्चों को भी नशा स्थायी रहना चाहिए। अभी तो नशा झट सोडा वाटर हो जाता है। सोडा भी ऐसे होते हैं। थोड़ा टाइम रखने से जैसे खारा पानी हो जाते है। ऐसा तो न होना चाहिए। किसको ऐसा समझाओ जो वह भी वण्डर खावे। अच्छा-2 कहते भी हैं; परन्तु फिर टाइम निकाल समझे, जीवन बनावे वह बड़ा मुश्किल है। बाबा कोई मना नहीं करते कि धंधा आदि न करो। यह तो टीचर है ना और यह है अनकॉमन पढ़ाई। कोई भी मनुष्य नहीं पढ़ा सकते। बाप ही भाग्यशाली रथ पर आकर पढ़ाते हैं। बाप ने समझाया है यह तुम्हारा तख्त है, जिस पर अकालमूर्त आत्मा आकर बैठती है। उनको यह पार्ट मिला हुआ है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। अभी तुम समझते हो यह तो रियल बात है। बाकी वह सभी हैं आर्टीफिशियल बातें। यह अच्छी रीत धारण कर गांठ बाँध लो, तो हाथ लगने से याद पड़ेगा। कोई तो गांठ क्यों बाँधी है यह भी भूल जाते हैं। तुमको तो यह पक्का याद करना है। बाप की याद साथ नॉलेज भी चाहिए। मुक्ति भी है तो जीवनमुक्ति भी है। बहुत मीठे-2 बच्चे बनो। बाबा अन्दर में समझते हैं कल्प-2 यह बच्चे पढ़ते रहते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही वर्सा लेंगे। फिर भी पढ़ाने लिए तो टीचर पुरुषार्थ कराते हैं। तुम घड़ी-2 भूल जाते हो इसलिए याद कराया जाता है। शिवबाबा को याद करो। वह बाप भी है..... छोटे बच्चे ऐसे याद नहीं करेंगे। कृष्ण के लिए थोड़े ही कहेंगे वह बाप भी है..... सतयुग का प्रिन्स श्रीकृष्ण। वह फिर गुरु कैसे बनेगा? गुरु चाहिए दुर्गति में। गायन भी है बाप आकर सभी की सद्गति करते हैं। कृष्ण को सांवरा भी ऐसा बना देते हैं जैसे काला कोयला। बाप कहते हैं इस समय सभी काम चिक्षा पर बैठ काले कोयले बन पड़े हैं तब सांवरा कहा जाता है। कितना गुह्य बातें समझने की हैं। गीता तो सभी पढ़ते हैं, अपना-2 अर्थ बैठ करते हैं। वास्तव में तो सन्यासियों को वेद-शास्त्र-उपनिषद आदि पढ़ने का हक नहीं। वह है प्रवृत्तिमार्ग वालों के लिए। यज्ञ-तप, दान-पुण्य आदि तुम ही करते आए हो। सन्यासियों की तो बात ही नहीं। वह तो आते ही हैं पीछे। पीछे आने वाले को शास्त्र आदि नहीं पढ़नी है। क्रिश्चियन लोग ऐसे पक्के होते हैं जो कब दूसरा कोई का शास्त्र, किताब आदि हाथ में भी नहीं लेते। भारत ही है जो सभी शास्त्रों को मानता है। सभी के चित्र रखते रहेंगे, तो उनको क्या कहेंगे? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। कृष्ण की भक्ति छोड़ राम की तो वह भी व्यभिचारी ठहरे ना। आजकल मंदिरों में भी बहुत चित्र रख देते हैं। बाप समझाते हैं वह है व्यभिचारी भक्ति। अव्यभिचारी भक्ति एक ही शिव की होती है। ज्ञान भी एक शिव से मिलता है। यह ज्ञान ही डिफरेन्ट में है। इनको कहा जाता है स्प्री॰ नॉलेज। बाप कैसे आते हैं यह भी तुम जानते हो। तुमको ब्रह्मा के लिए कहते हैं। बोलो– यह तो झाड़ के अन्त में खड़ा है। झाड़ का विनाश होता है तो फिर जाकर यह कृष्ण बनते हैं या ल॰ना॰ बनते हैं, बात एक ही है। कृष्ण के लिए कहते हैं गीता सुनाई। ना॰ को ज्ञान नहीं था क्या, ल॰ना॰ छोटेपन में कौन थे, कुछ भी जानते नहीं। तुम जानते हो। यही राधे-कृष्ण स्वयंवर बाद ल॰ना॰ बनते हैं। अच्छा, ओम।